مارچ ۲۰۰۷ء

ماہنامہ شعاعِ عمل لکھنؤ

قَالَ اللہُ تبارَکَ وَ تعالٰی

قَدْ جَاءَکُمْ مِنَ اللہِ نُوْرٌ وَ کِتَابٌ مُبِیْنٌ

بیشک اللہ کی طرف سے تمہارے پاس نور آیا ہے اور روشن کتاب

یا فاطمۃ الزہرا



مؤسسۂ نور ہدایت حسینیہ غفران مآبؒ لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2005-07

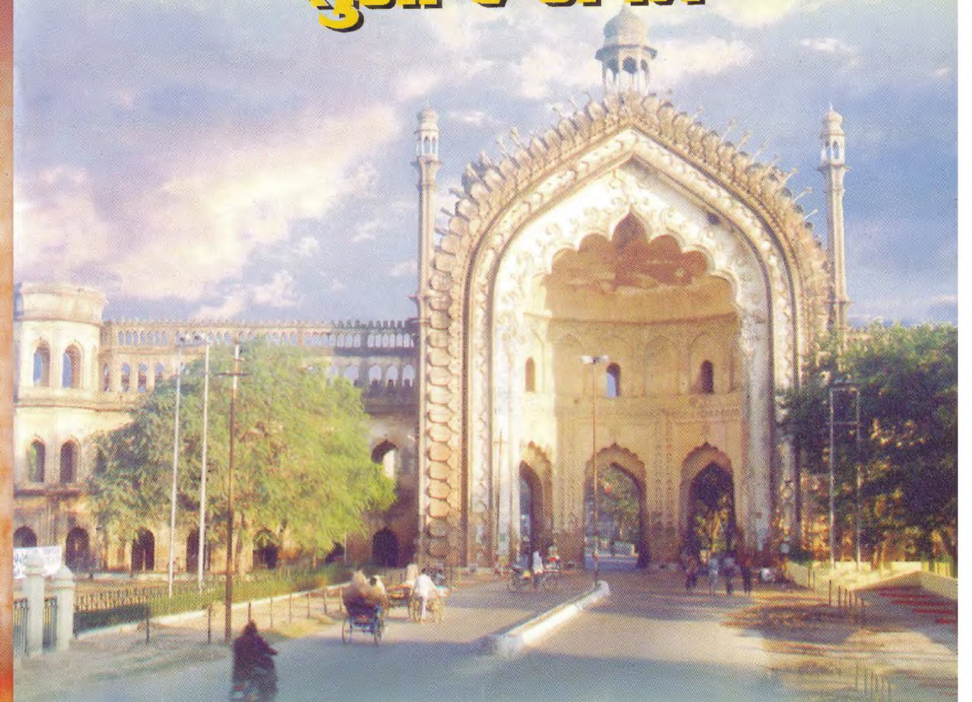
Monthly

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

March 2007



हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

लखनऊ



NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk
LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA
Phone : 2252230

वर्ष—3

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक—9

माह मार्च — 2007 लखनऊ

नूर—ए—हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

वार्षिक — 200 रु

मिलने का पता

क़ीमत — 20 रु

नूर—ए—हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ — 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522—2252230

website: www.noorehidayat.com
e-mail: noorehidayat@noorehidayat.com

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ—ए—अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर—ए—हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ—3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै0 मुस्तफा हुसैन नक़वी 'असीफ जाएसी'।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

न0	मज़मून लेखक	पेज न0

अक़वाले इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम

1- लोग जितने नये-नये गुनाह ईजाद करते हैं ख़ुदा तआला उन पर वैसी ही नई-नई मुसीबतें नाज़िल करता है जिन्हें वह सोच भी नहीं सकते थे।

2- ख़बरदार! ख़ुदा के रास्ते में माल ख़र्च करने में कमी न करो वरना ख़ुदा की नाफरमानी में उससे दोगुना ख़र्च करोगे।

3- अगर तुम में से कोई किसी मोमिन भाई को दोस्त रखे तो उसे बता दे।

इमाम मूसा काज़िम (अ0)

आयतुल्लाहिल उज़मा सैय्येदुल उलमा सैय्यिद अली नक़ी ताबा सराह

विलादतः– 7 सफ़र 128 हिजरी
शहादतः– 25 रजब 182 हिजरी

आपके ज़माने में सियासत का शिकंजा फिर सख़्त हो गया। अब न तालीम की वह आज़ादी रही न तबलीग़ और इशाअत के मौक़े बाक़ी रह गये हुकूमत बराबर आपके ख़िलाफ रही यहाँ तक कि आख़िर उम्र के कई साल पूरे के पूरे क़ैदख़ाने में गुज़र गये मगर आपकी बुलन्द सीरत की रौशनी इतनी तेज़ थी कि क़ैदख़ाने की ऊँची और संगीन दीवारें उसके लिए एक नाज़ुक और हल्के पर्दे से ज़्यादा न थीं जिसके अन्दर से उसकी किरनें छन–छन कर बाहर निकलती रहीं। यहाँ तक कि चौदह सदियाँ पार करके हम तक भी पहुँच सकी हैं। चुनानचे इसी सीरत की बुलन्दी का नतीजा यह था कि उस वक़्त की हुकूमत के तय किए हुए क़ैदखानों के अफसर आपकी नेकी के सामने हथियार डाल देते थे और आपके साथ सख़्ती करने से माज़ूर रहते थे जिसके नतीजे में बार–बार निगरानों के बदलने की ज़रूरत होती थी। चुनानचे पहले आपको बसरा में ईसा बिन जाफ़र बिन मन्सूर की निगरानी में रखा गया इस हिदायत के साथ कि इनको अकेले क़ैद रखो और कुछ दिन के बाद हुक्म दिया कि इन्हें क़त्ल कर दो। वह उस वक़्त के ख़लीफा का चचाज़ाद भाई था मगर उसके दिल पर इमाम मूसा काज़िम (अ0) के अच्छे किरदार का असर पड़ गया था। उसने लिखा कि मैंने उनके हालात की ख़ूब जाँच की है वह तो हमेशा दिन को रोज़ा रखते हैं और दिन रात इबादत में लगे रहते हैं अकेले में भी हम में से किसी के लिए बद्दुआ नहीं करते बल्कि अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं कि तूने मुझे अपनी इबादत के लिये यह अकेलेपन की जगह दी। ऐसे ख़ुदा के मानने वाले और इबादत करने वाले की जान लेना मेरे बस की बात नहीं है।

जब उसने इन्कार किया तो आपको बसरा से बुलवाकर बग़दाद में फज़्ल बिन रबी के हवाले किया गया। मगर फज़्ल पर भी आपके किरदार का बहुत असर पड़ा। आख़िर फज़्ल बिन रबी को भी इस सूरत से हटाया गया। यहया बरमकी को सीधे तौर पर निगराँ बना दिया गया और फिर उससे भी मुतमइन न होकर सनदी बिन शाहिक को तैयार किया गया। यह ऐसा संगदिल और लड़ाकू था कि इसने धोके से ज़हर देकर इमाम(अ0) की ज़िन्दगी का ख़ात्मा किया।

ज़िन्दगी में क़ैदख़ाने में क़ैद रखे गये और फिर क़ब्र के अन्दर दफ़न हो गये बल्कि उनके ज़बान और क़लम से निकले हुए बहुत से इरशादात और तालीमें और नबी की शरीअत के अहकाम अब तक किताबों के सफहात पर मौजूद हैं जो बता रहे हैं कि वह उसी सिलसिले की एक कड़ी थे जिसमें से हर एक अपने ज़माने के हालात के हिसाब से इन्सानी क़ाफले को उसकी मुकम्मल इन्सानी मन्ज़िल तक पहुँचाने के लिए रास्ता दिखाने का फर्ज़ अन्जाम देता रहा। और अपने किरदार की बड़ाई से ''मेराजे इन्सानियत'' की राह दिखाता रहा। □□□

एक सबक़ इस्लाम से

सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद क़ल्बे आबिद साहिब क़िब्ला ताबा सराह

पिछले शुमारे से आगे

अद्ल (न्याय) का अर्थ है कि ईश्वर वही बात करता है जो न्याय के अनुरूप हो। वह किसी पर ज़ुल्म और ज़ियादती नहीं करता। यह सम्भव नहीं है कि अच्छे कार्य करने वालों और इबादत गुज़ारों अर्थात् उपासना करने वालों को नर्क में डाल दे और बुरे कार्य करने वालों को स्वर्ग में पहुँचा दे ईश्वर का न्याय भी, दूसरी सिफाते सुबूतिया अर्थात वह गुण जो ईश्वर में पाये जाते हैं, की तरह है। यद्यपि इसका उसूले दीन में यानी धर्म के मूल सिद्धान्तों में अलग से इसलिए वर्णन किया जाता है कि कुछ लोगों ने ईश्वर की इस विशेषता से इन्कार किया है। वह कहते हैं कि, ईश्वर के लिए इसका कोई प्रश्न ही नहीं। क्योंकि दुनिया में जो कुछ है वह ईश्वर का पैदा किया हुआ है और उसकी ही मिलकियत या स्वामित्व में है। अपनी मिलकियत में अर्थात् अपने स्वामित्व में मालिक को हक़ होता है कि जिस प्रकार चाहे वह व्यवहार करे। मालिक एक ही कपड़े के एक टुकड़े की टोपी और दूसरे का मोजा बना सकता है। किसी को हक़ नहीं कि यह कहे, कि एक को पस्ती और दूसरे को बुलन्दी क्यों दी? इस प्रकार अच्छे भी ईश्वर के बन्दे और बुरे भी। उसका अधिकार है कि चाहे तो अच्छे लोगों को नर्क में झोंक दे और बुरे लोगों को जन्नत में ऊँची और अच्छी मन्ज़िल में स्थान दे। उससे किसी को पूछताछ का अधिकार नहीं। यह ठीक है कि प्रत्येक वस्तु ईश्वर की मिलकियत या स्वामित्व में है अर्थात् उसकी सम्पत्ति है। और यह भी ठीक है कि ईश्वर से ऊँचा कोई नहीं कि उस से कोई पूछताछ करे, लेकिन चूँकि ज़ुल्म अपने आप में बुरी चीज़ है और ईश्वर की ज़ात प्रत्येक बुराई से पाक और स्वच्छ है। उसकी पवित्रता की गवाही सृष्टि की प्रत्येक वस्तु देती है। अतः ईश्वर की ज़ात पर ज़ुल्म का, अन्याय का धब्बा भी नहीं आ सकता है। मोज़े और टोपी का उदाहरण ठीक नहीं है, क्योंकि कपड़ा न कल्पना रखता है न अधिकार। न उसके यहाँ आज्ञापालन का विचार है और न अवज्ञा का। अतः मालिक को पूरे अधिकार प्राप्त हैं। लेकिन यदि एक व्यक्ति के दो गुलाम हों, एक हर तरह से हर बात मानने वाला और आज्ञाकारी हो और दूसरा मालिक से ज़बान लड़ाए और उसका काम न करे और मालिक पहले को इन्आम या पुरस्कार देने के बजाए सज़ा दे और दूसरे को दण्ड देने के बजाए पुरस्कार दे, तो मालिक का यह कार्य नापसन्दीदा यानी अरूचिकर कहा जायगा।

आश्चर्य होता है कि ''कुर्आने मजीद'' में ईश्वर की न्यायता (अदालत) के पक्ष में इतने सुस्पष्ट बयान के बाद, यह कैसे माना जाता है।

क्योंकि कहीं इरशाद (वर्णित) हैं, ''ईश्वर बन्दों पर जुल्म नहीं करता।'' कहीं वर्णित है या कथित है कि, ''ज़ालिमों पर ईश्वर की लानत (अभिशाप) है।'' जो दूसरों पर जुल्म की वजह से लानत करे वह ख़ुद कैसे जुल्म कर सकता है। कहींयह वर्णित या कथित है कि ''ईश्वर स्वयं, फरिश्ते और तमाम ज्ञान वाले (जिनमें सब पैग़म्बर आ गये) इसके गवाह हैं कि वह एक है और न्याय और इंसाफ पर क़ायम है। कुर्आन एलान कर रहा है कि, ''ईश्वर की बात सच्चाई और न्याय के लिहाज़ से पूरी है।''

मुसलमानों को हुक्म दिया जा रहा है कि किसी क़ौम की शत्रुता (दुश्मनी) तुम्हें इस जुर्म (अपराध) में मुब्तला यानी ग्रस्त न करें कि तुम न्याय से न पेश आओ। यही बात तक़वे अर्थात् ईश्वरीय भय से सन्निकट है। कुर्आन कहता है कि, ''सभी पैग़म्बरों की ग़रज़े बेअ्सत अर्थात् उन्हें भेजे जाने का उद्देश्य न्याय की स्थापना है। हमने अपने पैग़म्बरों को खुली हुई सच्चाई की दलीलें (तर्कनायें) देकर भेजा। उनके साथ किताब और मीज़ाने अमल (आचरण की तुला) नाज़िल की, अवतरित की ताकि लोग न्याय के साथ क़याम (स्थापना) करें।''

अब आप बताइये कि इन सब विधियों के प्रकाश में कैसे सम्भव है कि ईश्वर को ''आदिल'' यअ्नी न्याय करने वाला न माना जाये।

ईश्वर को आदिल या न्याय करने वाला, न मानने का फल यह निकलता है कि कुर्आन में जन्नत–जहन्नम, अज़ाब–सवाब यअ्नी स्वर्ग–नर्क, यातना–पुण्य आदि के बारे में जितनी आयतें हैं सब निरर्थक हो जायेंगी। यह इसी लिए तो है कि इबादत व इताअत आर्थात् पूजन और आज्ञापालन का शौक़ पैदा हो और नाफ़रमानी (अवज्ञा) से बचा जाये। और जब व्यक्ति यह विचार करे कि सम्भव है कि सब कुछ करने के बाद भी नर्क में चला जाऊँ और प्रत्येक बुराई करने के बाद भी जन्नत मिल जाये तो किसी को क्या पड़ी है कि कष्ट झेले और बेकार का सरदर्द मोल ले।

कुछ लोग ईश्वर की न्यायता के दर्जे में इतना हद से बढ़ गये (मुअ्तज़िला हो गये) कि उन्होंने ईश्वर की ओरसे क़यामत में बख़्शे जाने और शिफाअत यअ्नी अनुशंसा आदि सबका इन्कार कर दिया क्योंकि उनके नज़दीक बड़े गुनाह का आवश्यक फल यह है कि सज़ा मिले। यह कहते हैं जिस प्रकार फरमाँबरदार (अज्ञाकारी) को जज़ा या फल न देना क़ानून के ख़िलाफ है उसी तरह ना फरमान यअ्नी कहना न मानने वाले को, उसका फल या सज़ा न देना न्याय के ख़िलाफ है। ईश्वर ने कुर्आन में और रसूल ने हदीसों में स्पष्ट किया है कि इताअत करोगे (कहना मानोगे) तो जज़ा या प्रतिदान मिलेगा और नाफरमानी (अवज्ञा) करोगे तो दण्ड मिलेगा। किसी के लिए इन्आम के इक़रार को ''वअ्दा'' और दण्ड के एलान को ''वईद'' (चेतावनी) कहते हैं। ईश्वर और उसके पैग़म्बर के कलाम (कथन) में 'वाअ्दे' भी हैं और 'वईद' भी। और पैग़म्बरों का गुण 'बशीर' (सुसंवाद देने वाला) और 'नज़ीर' (डराने वाला) भी है। तो दोनों बातों को पूरा होना चाहिए।

(जारी)

हुसैन और हिन्दुस्तान

सैय्येदुल उलमा सैय्यिद अली नक़ी नक़वी ताबा सराह

उस जाति या उस संस्था के विषय में कुछ कहना ही नहीं है जो ''जिस की लाठी उसकी भैंस'' की कहावत को ठीक समझती हो। निस्सन्देह ऐसी संस्था के नज़दीक कर्बला का जिहाद और शहीदे कर्बला का उत्तम बलिदान एवं उनकी अमिट सफलता और विजय केवल हार ही है। और यही कारण है कि कर्बला की घटना की यादगार उन्हें अपनी ओर आकर्षित नहीं करती। किन्तु ये लोग भी खुल कर हज़रत इमाम हुसैन(अ0) के इस महान कार्य के ख़िलाफ मुँह नहीं खोल सकते और यही हुसैन (अ0) की सत्यता का बड़ा सबूत है। यद्यपि वे माया बन्दी हुसैन (अ0) के ख़िलाफ मुँह खोलना भी चाहते हों तो उनमें इतना साहस ही नहीं और अगर साहस भी है तो वे जानते हैं कि उन्हें इसमें सफलता प्राप्त न हो सकेगी। फिर भी वे चोरी छुपे हुसैन (अ0) के मातम को मिटाने के के जो प्रयत्न करते हैं प्रायः वह दिखाई देते रहते हैं। और उनके यह प्रयत्न उनके दिल का हाल बताने के लिये काफ़ी हैं। राजनीति क्षेत्र में पश्चिमी जातियाँ केवल ताक़त को हक़ समझने को उचित जानती हैं और उनमें कोई भी ऐसा नहीं है जो उसके ख़िलाफ हो यह और बात है कि कोई हिटलर बनकर तलवार और तोपों से अपनी शक्ति को दिखाएँ और कोई विश्व शान्ति के नाम पर अपनी ताक़त को राजनीति के रंग में रंग कर सामने आए परन्तु इनमें से हर एक के दिल व दिमाग़ पर हिटलरी छाई हुई है। इसीलिये यदि ये आपस में कोई संधि भी करें तो उस पर क़ायम नहीं रह सकते और वे विश्वशान्ति के लिये लाभप्रय सिद्ध नहीं हो सकती। कहावत है कि ''दो फ़क़ीर एक कमली में सो सकते हैं और दो बादशाह एक देश में नहीं रह सकते'' चूँकि साइंस के इस युग में जब सभ्यता का सूर्य संसार के कोने कोने को प्रकाशमान किये हुए हैं पूरा संसार एक मुल्क की हैसियत रखता है और अब बादशाहों की जगह वर्तमान काल के शक्तिवानों ने ले ली है इसलिए अब कहावत यह होनी चाहिए कि ''दो हिटलर एक विश्व में नहीं रह सकते'' और फिर इन हिटलरों के बीच यदि कोई संधि भी हो तो वह कै दिन चलने की!

यूरोप जो अपनी ईसाईयत के साथ–साथ जीवन के हर क्षेत्र में अनात्मावादी हो गया है, किसी ऐसे युद्ध को ध्यान में भी नहीं ला सकता जो आत्मावाद पर निर्भर हो। यही कारण है कि यूरोप के लेखकों ने जिस ज़ोर के साथ उन मुसलमान विजेताओं का उल्लेख किया है जिन्होंने अपनी तलवार के बल पर देश जीते हैं इतने ज़ोर के साथ और उतनी महत्त्वता के साथ उन्होंने कभी कर्बला के महा विजयी के कारनामों पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि इन यूरोप के इतिहासकारों के पास वह दृष्टि नहीं है जो हुसैन (अ0) की इस जीत को देख सके जो उन्होंने बेकसी की हालत में अपने शत्रु यज़ीद पर पाई थी। पूर्वी गोलार्ध में भारत ऐसा देश है जहाँ सदा आत्मवाद की चर्चा रही। और इस देश में पैदा होने वाले सभी धर्मों ने अहिंसा की शिक्षा उस समय दी जब संसार हिंसा का पुजारी बना हुआ था। और इस अहिंसा की दौड़ में हर धर्म अपने को आगे बढ़ाने की कोशिश में लगा रहा। किसी धर्म ने अहिंसा का अर्थ ''मानवहत्या'' से बचना समझा तो किसी ने जानवरों की हत्या से भी रोक दिया और किसी ने अहिंसा की सीमा को इतना बढ़ा दिया कि कीड़े मकोड़ों और ज़हरीले

जानवरों को भी मारना पाप समझा।

अब अन्त में गाँधी जी ने जो युद्ध अंग्रेज़ों के ख़िलाफ किया उसका आधार अहिंसा ही थी उन्होंने ताक़त को हक़ के बचाए हक़ (सत्य) को ही एक शक्ति माना और इसी सिद्धान्त को सामने रख कर इस प्रकार अपनी सेना को सत्य ध्वजा के नींचे इकटठा किया कि अन्त में उनको सफलता प्राप्त हुई। और उन्होंने देश की स्वतंत्रता के स्वप्न को हमारे समक्ष ला खड़ा किया। जो हमारी आँखों के सामने है। यहाँ तक कि उनकी इस सफलता से प्रभावित होकर अब तो कभी–कभी यूरोप वाले भी सत्य और उसकी शक्ति की चर्चा करने लगे हैं। गाँधी जी की अहिंसा की विचारधारा की सीमाएँ हमारे दृष्टिकोण से कुछ विभिन्न सही फिर भी जिस पर उनकी अहिंसा की नीव है वह सिद्धान्त बहुत कुछ अहलेबैत रसूल (रसूल के घराने वाले) के इस्लामी सिद्धान्त से मिलता जुलता है जिस को बहुत खुले ढंग के प्रयोग में लाकर अनुभव की दुनिया में उसके फल का प्रदर्शन करके इमाम हुसैन (अ0) ने संसार को सत्य की शक्ति का ज्ञान कराया था। फिर यह सिद्धान्तों की एकता संयोगवश न थी बल्कि गाँधी जी ने खुले शब्दों में अकसर इस बात को बताया कि उन्होंने कर्बला की घटना का अच्छी प्रकार अध्ययन किया था और उससे प्रभावित हुए थे। और उन्होंने प्रायः कहा कि स्वतंत्रता संग्राम में वह हुसैन (अ0) को अपना पथप्रदर्शक जानते हैं। इसी लिये नमक के मैदान में जाते समय उन्होंने अपने साथियों की संख्या बहत्तर रखते हुए यह बताया कि वह इस प्रकार हुसैन के नेतृत्व में रहने का सबूत पेश करना चाहते थे। ऐसी दशा में देश के स्वतंत्र होने के बाद केवल भारत ही से ऐसी आशा है कि वह शहीदे कर्बला की स्मृति को फलने–फूलने का अवसर दे। आज से पहले भी हमारे देश का झुकाव सदा मातमे हुसैन की ओर रहा है। ग्वालियर का मुहर्रम इस बात को सिद्ध करने के लिये एक ऐतिहासिक सनद है। हिन्दुओं का हुसैन (अ0) के शोक मनाने में भाग लेना इस वजह से न था कि मुसलमान इस देश में विजयी जाति के रूप में आए और राजा के धर्म का प्रभाव प्रजा पर बहुत पड़ता है। यदि ऐसा होता तो फिर मुसलमानों में प्रचलित त्योहार जैसे ईद, बक़रीद या क़व्वाली वग़ैरा से इस देश के निवासियों ने कोई सम्बन्ध क्यों नहीं स्थापित किया। इसलिए कहना पड़ेगा कि जहाँ तक रीति रिवाज का सम्बन्ध है हिन्दू मुसलमानों से प्रभावित नहीं हुए बल्कि मुसलमान ही हिन्दुओं से प्रभावित हुए। शादी विवाह, मरनी करनी को देख लीजिये कि कौन प्रभावित जाति है। फिर हुसैन का ग़म मनाना ज़ाहिर है कि जो क़ौम मुसलमानों की विजयी के रूप में भारत में राज्य करने को आई उसने इमाम हुसैन के मातम को रवाज देने का कोई प्रयत्न न किया वह बहुधा इससे कोई मुख्य लगाव नहीं रखती थी ऐसी हालत में इस देश और हिन्दु और हिन्दू समाज में हुसैन की स्मृति को क़ायम रखने में किसी दबाव या ताक़त से काम नहीं लिया गया बल्कि देश का मिजाज़ उससे अनुकूल था। और यहाँ के प्राचीन सिद्धान्तों में हुसैन (अ0) को हिन्दुओं में इतना प्रसिद्ध बना दिया। इतिहास से पता चलता है कि भारत वर्ष की वह रियासतें जो मुसलमानों की आधीन न थीं और जो मुसलमानों की शत्रु थीं वहाँ भी प्रेम पूवर्क हुसैन का ग़म मनाया जाता था। यह और बात है कि देश में कुछ ऐसे लोग पैदा हो गये जो अपने प्यारे नेता गाँधी जी को भी गोली से उड़ाने में कोई बुराई नहीं समझे वे यदि इमाम हुसैन (अ0) की स्मृति को मिटाने का प्रयत्न करें तो कोई अचम्भे की बात नहीं है। परन्तु देश के स्वस्थ वातावरण जिसमें हुसैन (अ0) के मातम का रवाज हुआ वह कभी भी हुसैन (अ0) की याद को भारत से मिटाने के प्रयत्न को सफल न होने देगा।

अब उन बयानों को देखिये जो हमारे

देश के ख़ास–ख़ास नेताओं ने दिए यादगारे हुसैनी सन् 1361 हि0 के लखनऊ के जलसे के अवसर पर देश के प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था ''इस अवसर पर हम अपने मतभेद भूल गये हमारी दलीलों का मुँह बन्द हो गया और हम सब एक हो गये हम में आपस में मित्रता स्थापित हो गई क्योंकि एक बड़े वयक्तित्त्व या एक महान कार्य की स्मृति पूरे संसार को एक लड़ में बाँध देती है और भूतकाल की धुंधली याद भी चौंका देने के लिये काफी है।

आज जब कि हम बड़ी–बड़ी घटनाओं के बीच और संसार के उलटफेर की चौखट पर खड़े हैं हमारे लिये यह उचित है कि हम इतिहास के मुख्य घटनाओं की ओर आकर्षित हों और भूतकाल के महान् कार्यों से शक्ति प्राप्त करें'' ज़ाहिर है कि वे घटनाएँ और समय के उलट फेर आज से दस साल पहले सम्भवतः कुछ और हों किन्तु निस्सन्देह आज भी हम उन बड़ी घटनाओं के बीच और इन्क़लाब की चौखट पर उसी प्रकार खड़े हैं जिस प्रकार आज से पहले खड़े थे बल्कि ज़िम्मेदारी के बढ़ जाने के कारण उन घटनाओं का महत्त्व और भी अधिक हो गया है। इसलिये सच्चे दिल ऐसे महान कार्य की स्मृति जो आपस के मतभेद को मिटा सके और विश्व को एक मित्रता के बन्धन में बाँध सके जितनी आवश्यक इस समयहै उतनी आवश्यक शायद उस समय न रही हो जब पंडित जी ने अपने मुँह से यह शब्द निकाले थे।

एक दूसरे संदेश में जो पंडित जी ने हुसैन डे कमेटी बम्बई को भेजा था उसमें लिखा है ''इस शहादत में एक ऐसा संदेश है जो समस्त संसार के लिए है। हज़रत हुसैन अलैहिस्सलाम ने अपना सब कुछ बलिदान कर दिया किन्तु एक अन्यायी यथा निर्दर्यी राज्य के आगे सिर न झुकाया। उन्होंने यह नहीं सोचा कि हमारी ज़ाहिरी शक्ति शत्रु के मुक़ाबले में कम है। इमाम की शक्ति उनके नज़दीक सबसे बड़ी शक्ति थी जो हर अनात्मवाद शक्ति को तुच्छ जानती है। हर जाति हर सम्प्रदाय के लिए वह बलिदान पथ प्रदर्शन के लिए दीपक का काम करती है''।

अब यह संदेश जिसे पंडित जी ने विश्व व्यापक बताया है क्या भारत के लिए उसी समय तक आवश्यक था जब तक देश ग़ुलाम था। क्या ज़ालिम के सामने सिर न झुकाने की माँग किसी मुख्य वातावरण के अधीन है वास्तव में एक शासक के लिए आवश्यक है कि वह एक ज़ालिम के सामने सिर झुकाने से बचें जिस प्रकार राज्यसिंहासन पर बैठे हुए किसी यज़ीद के हाथ में हाथ देने से इन्कार ज़रूरी है उसी प्रकार गोडसे जैसे लोगों से भी सरकार को न डरने की बड़ी आवश्यकता है।

हमारे स्वतंत्र देश की सरकार से इस समय उसके मित्रों और हमदर्दों को भी ज़ालिम होने की उतनी शिकायत नहीं है जितनी ज़ालिमों और अत्याचारियों के अत्याचार को छिपाने की की है। आक्शे ब्रह्मचारी का मरन ब्रत इसी ज़ुल्म (ज़्यादती) के ख़िलाफ अनुरोध का एक प्रदर्शन है। हम जानते हैं कि देश इन अत्याचारियों और हिंसकों को छोड़ देने का कारण उनकी अधिक्ता या उनकी ताक़त से प्रभावित होना ही है किन्तु यदि ईमान अर्थात सत्य को सत्य समझने की शक्ति पर कुछ भी भरोसा किया जाए तो कभी भी ज़ालिम अपनी मनमानी करने की हिम्मत नहीं कर सकता।

आधुनिक भारत में यह घोषणा खुलेआम होने की आवश्यकता है कि ''हर जाति और हर सम्प्रदाय के लिए यह बलिदान पथ प्रदर्शन में दीपक की हैसियत रखती है'' भारत की जनता ''ग़ैर मज़हबी'' होने के बाद भी ''हर जाति और हर सम्प्रदाय के दायरे से बाहर नहीं हो सकती इसलिए हुसैन इब्ने अली (अ0) की क़ुर्बानी की यादगार इस स्वतंत्र भारतसे उसी प्रकार मनाए

जाने की माँग कर सकती है जिस प्रकार एक ऐसे देश से कर सकती है जो अपने को एक जाति और एक सम्प्रदाय; समझता हो।

हमारे देश के गणतंत्र राज्य के राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्र प्रसाद ने कहा है कि ''कर्बला की शहादत की घटना मानव इतिहास की वह घटना है जो कभी भुलाई नहीं जा सकती और जो संसार के करोड़ों मर्दों और औरतों के जीवन को प्रभावित करती रहेगी। भारत में इस घटना की स्मृति बड़े पैमाने पर मनाई जाती है जिसमें न केवल मुसलमान भाग लेते हैं बल्कि वे भी जो मुसलमान नहीं हैं बराबर अपनी रुचि का सबूत देते हैं और इसमें भाग लेते हैं'' यह खुली हुई बात है कि किसी चीज़ के बारे में वास्तविक्ताएँ वातावरण के बदलने से बदला नहीं करतीं ''कभी भुलाया नहीं जा सकता में कभी का शब्द अगर अपने पूरे अर्थ सहित प्रयोग में आया हो तो इसमें तब और अब का अन्तर होना असम्भव सी बात है। करोड़ों मर्दों और औरतों की संख्या यदि किसी धर्म की जनसंख्या से सम्बन्धित हो तो बात के अन्त में ग़ैर मुस्लिम लोगों की समान दिलचस्पी'' ने एक धर्म की विशेषता को बाक़ी नहीं रखा। इसलिये देश में चाहे कोई भी सरकार स्थापित हो किन्तु वह हुसैन(अ0) की इस स्मृति को साम्प्रदायिक मानकर उससे आँख बचाने और अलग रहने का अधिकार प्राप्त नहीं कर सकती।

अन्त में हम बाबू श्री पुरुषोत्तम दास टंडन के शब्दों की ओर आप की ध्यान दृष्टि को आकर्षित करना चाहते हैं। चूँकि आपके व्यक्तित्त्व को देश सेवा में काफी महत्त्व प्राप्त है इसलिए आप के शब्दों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है आपके विचारों को नहरू जी के विचारों के विरूद्ध माना जाता है आपको हिन्दू संस्कृति का पुजारी होने के कारण साम्प्रदायिक विचारों का माना जाता है इसलिए आप के विचार जो शहीदे कर्बला हज़रत इमाम हुसैन (अ0) के बारे में हैं वह समझने तथा देखने योग्य हैं।

आपने लखनऊ की हुसैन डे कमेटी को निम्नलिखित संदेश भेजा था ''शहादते हुसैनी मेरे लिए सदा एक दुःखद आकर्षणशक्ति अपने अन्दर रखती थी उस समय जब मैं एक छोटा बालक था। मैं उस महान ऐतिहासिक घटना की याद मनाने के महत्त्व को समझता हूँ। इतने महान बलिदानों से जो कि इमाम हुसैन (अ0) ने उपस्थित किए हैं उन्होंने मानवता के स्तर को बहुत ऊँचा कर दिया है। और उनकी स्मृत मनाने और क़ायम करने के योग्य है''।

टंडन जी के शब्दों में यदि कोई महत्त्व और वास्तविकता है तो केवल उनकी इस स्कीम के होते हुए भी किसी देश में एक ही संस्कृति होनी चाहिए शहादते हुसैन की यादगार को इस उभयनिष्ठ संस्कृति का एक आवश्यक अंग होना चाहिए जिसमें आप तमाम देश को रंगना चाहते हैं। इसलिए कि वह समस्त मानवता को ऊँचा उठाने वाली है और बिना किसी मतभेद के मनाने और स्थापित करने के योग्य है।

टंडन जी का यह कहना है कि हमारे देश की प्राचीन रीतियों और रवाजों तथा सभ्यता को फिर से ज़िन्दा करना चाहिए इस बात का निमंत्रण देता है कि हुसैनी यादगार इस देश में क़ायम रहना चाहिए इसलिए कि इस मुल्क की पुरानी प्रथा है कि निर्दयी तथा हिंसक से घृणा और दुखी के साथ हमदर्दी।

इन्हीं प्राचीन रिवायत का फल यह था कि जिन्हें अरब की भूमि पर शरण न मिलती थी वे भी हिन्दुस्तान आ कर शरण लेने का इरादा रखते थे। इसलिए इन्हीं पुरानी प्रथाओं के आधार पर शहीदे कर्बला की यादगार का इस देश में क़ायम रखना कांग्रेस सरकार का या जो भी देश की सरकार हो उसका कर्तव्य है। □□□

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम

प्रोफेसर सैय्यिद एहतिशाम हुसैन रिज़वी साहब माहुली

कर्बला की घटना की श्रेष्ठतम को अपने समय के प्रत्येक दार्शनिक, साहित्यकार, कवि तथा इतिहास लेखकों ने सराहा है। प्रत्येक दृष्टि में इसकी प्रधानता और श्रेष्ठता का रहस्य केवल अत्याचार के मुक़ाबले में धर्म और सत्य का झण्डा ऊँचा करने में नहीं रहा है। एवं इमाम हुसैन का असाधारण व्यक्तित्व प्रकट करने में रहा है। जहाँ तक कर्बला में घटित घटनाओं का सम्बन्ध है तो बहुधा उन्हें अदभुत नहीं कहा जा सकता, क्योंकि अगर एक रूप से देखा जाए तो इतिहास में भूख और प्यास में प्राण तज देने वाले भी मिल जायेंगे तथा वह स्त्रियाँ भी जिन्होंने कारावास के कष्ट सहन किये एवं वह बालक भी जिनकी पाप हीन हत्या की गई। ऐसे युवक भी मिलेंगे जिन्होंने अपने माता–पिता के सम्मुख अपने प्राण तज दिये।

सम्पूर्णतः इस घटना में उच्च उद्देश्य, गम्भीर स्वभाव तथा धर्म पालन व दृढ़ सत्यता जैसे वह उदाहरण मिलेंगे जिनकी समानता असम्भव है।

इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि इसमें इमाम हुसैन (अ0) एक केन्द्र–बिन्दु के समान थे, उन्हीं के चरित्र से प्रत्येक चरित्र को धैर्य मिलता था, चाहे वह मित्रों का हो अथवा उस समय पर उपस्थित हो जाने वालों का, चाहे बालकों का हो, चाहे स्त्रियों का। इमाम हुसैन ने कर्बला की घटना को अमिट बनाने के लिये जो तरीक़ा अपनाया था, अगर उसे मनोवैज्ञानिक रूपों से जाँचा और परखा जाए तो बहुत से लाभदायक और आवश्यक परिणाम ग्रहण किये जा सकते हैं।

इमाम हुसैन की आयु कर्बला में 57 वर्ष की थी। इस आयु में विचार जटिल हो जाते हैं, इच्छाओं में दृढ़ता आ जाती है। मनुष्य जो बात करना चाहता है, तो सोच–विचार कर क़दम उठाता है। इस आयु में अगर कोई रण क्षेत्र में प्राण तजने आता है तो जानकर आता है कि क्या करने जा रहा है।

यह आत्म हत्या नहीं होती, वास्तव में मस्तिष्क और मन एक साथ चिन्तित होते हैं, अनुभवों और मस्तिष्क की शक्तियों का एक साथ कार्य होता है। इस आयु का मनुष्य केवल विचारधारा के प्रवाह में बहकर कार्य नहीं करता।

एक साधारण मनुष्य भी 57 वर्ष की आयु में दृढ़ विचारों वाला माना जाता है। हुसैन ने नयन मूँद कर 57 वर्ष की अवधि व्यतीत नहीं की थी, बल्कि वह ऐसी घटनाओं से भरे हुए थे। न केवल अरब के इतिहास ने वरन संसार के इतिहास ने उनके सम्मुख पलटे खाये थे। हुसैन (अ0) की आयु 7 वर्ष की थी जब मुहम्मद साहब (नाना) का देहान्त हुआ। वह प्रत्येक ज्ञान प्राप्त करने की आयु थी। अगर आज किसी मनोवैज्ञनिक से प्रश्न करें कि बाल्यावस्ता में चरित्र–निर्माण किस प्रकार होता है तो वह आपको बतायेगा कि 7 वर्ष की आयु ऐसे नक़्श अपने में बिठा लेती है जो साधारणत्या युवक नहीं देख पाते। 7 वर्ष के बने हुए नक़्श मृत्यु समय तक बाक़ी रहते हैं।

मुहम्मद साहब ने भरपूर निश्चय के पश्चात यह कहा था कि:–

''हुसैन मुझ से है और मैं हुसैन से हूँ।''

हुसैन इन शब्दों को नहीं भूले, लेकिन कर्बला में जो अत्याचारी आये थे वह भूल गए थे।

जो तीरों से आक्रमण कर रहे थे। जिन्होंने

सरिताओं पर पहरे बिठा दिये थे। जो सम्पूर्ण–कुटुम्ब को नष्ट कर देने का निश्चय कर के आये थे। वह भूलगये थे कि हुसैन ने 7 वर्ष की आयु में जो आवाज़ सुनी है, जो दृश्य देखे थे उन्हें अपने मस्तिष्क में बिठा लिया। आज मुहम्मद (नाना) का देहान्त हुआ उस समय को नहीं भूले जब अली (पिता) ने प्राण तजे, उस समय को नहीं भूले। जब फ़ातिमा (माता) की मृत्यु हुई, उस समय की याद भी थी, जब उनके भाई हसन ने संसार छोड़ा, वह दुखित दृश्य भी सम्मुख था। बस अवसर की प्रतीक्षा थी कि कौन सा समय आयेगा कि जब अपने नाना मुहम्मद (स0) की इस बात को सिद्ध कर दिखाऊँगा कि ''हुसैन मुझसे है'' यह पचास वर्ष के प्रयत्न का फल था जो हुसैन ने कर्बला के रणक्षेत्र में पूरा करके दिखला दिया।

कर्बला की घटना से पूर्व भी संसार के सम्मुख हुसैन एक आदरणीय मानव थे। उन्होंने मुआविया को पत्र में लिखा था कि मेरे लिये यह क्या कम है कि मैं अली का बेटा (पुत्र) हूँ हुसैन ने अपने जीवन में बाल्यावस्था से कष्ट–सहन करना सीखा था। उनके नाना वह थे कि भूख से व्याकुल होकर घर में आते थे कि बेटी (पुत्री) कुछ प्रबन्ध करे।

उनकी माता वह थीं कि चक्की पीस कर जीविका–पालन करती और तीन–तीन दिन तक फाक़े करतीं। हुसैन ने ऐसे वातावरण में शिक्षा ग्रहण की थी।

सांसारिक दुखों को झेला था। विभिन्न परिस्थितियों को समझा था। वह ऐसे भोग–विलास के आदी नहीं थे। जिसको प्राप्त करने में उनको रुकावटें पड़ती परन्तु उनकी दृष्टि में वह उद्देश्य था जिस तक पहुँचना सुगम न था।

वह लक्ष्य उन्हें नाना के प्रेम ने दिखलाया था। उन्के सम्मुख तो केवल एक प्रश्न था कि मुहम्मद (स0) ने मुझ पर जो ये भरोसा किया था कि अगर इस्लाम पर संकट का समय आयेगा तो मैं रक्षा करूँगा। अतः उस भरोसे को पूर्ण कर दिखलाना उनके लिए अनिवार्य हो गया था। यह वाक्य बराबर प्रयोग होता रहता है कि–

''इस्लाम ख़तरे में है''

इन्सान कभी इससे अधिक संकट में नहीं रहा जैसे सन् इकसठ हिजरी में था।

यूँ तो तातारियों ने मुसलमानों पर बड़े अत्याचार किये। बग़दाद के राज्य–पाट को उलट दिया गया, इस्पेन से मुसलमान निकाल दिये गये। मुसलमानों पर विभिन्न कालों में विपतायें आईं मगर यह बात इसके पश्चात की है। जब इस्लाम संभल चुका था। इस्लाम का धारा जारी हो चुका था। जब एक ओर इस्लाम को रोका जाता था तो दूसरी ओर बढ़ जाता था किन्तु हुसैन ने इस्लाम की रक्षा उस समय की जब इसका धरा बहुत पतला था, जिस पर यज़ीद का बन्धन बाँध देना वास्वत में इस्लाम को समाप्त कर देना था। हुसैन (अ0) के सम्मुख इसके अतिरिक्त और कुछ न था कि यज़ीद इस धारे को रोक न सके इनको यह चिन्ता पचास (50) वर्ष तक रही कि जब इस्लाम पर सबसे कठिन समय आये तो वह इसको बचा लें।

'सिफ्फीन' के रणक्षेत्र में अली के सर पर बोझ था हुसैन ने (अ0) कोई राय नहीं दी, इमाम हसन (अ0) ने जब सन्धि करनी चाही तो उन्होंने उनका हाथ नहीं रोका क्योंकि उन्हें ज्ञान था कि हमें और समय प्राप्त होगा, हमें और समय तन और प्राण की बाज़ी लगानी पड़ेगी उस समय जो इस्लाम को बचा सकें बचा लें जैसा उनके बलिदानों से बच सके वह बचा लें, हमारी समझ में आयेगा हम रक्षा करेंगे। अली (अ0) ने बड़ी–बड़ी सेनायें एकत्रित करके इस्लाम की रक्षा का प्रयत्न किया, हुसैन (अ0) के लिए संघर्ष उचित न था या सन्धि का उन्होंने दूसरा तरीक़ा अपनाया। महान सेनाओं का मुक़ाबला छोटी–छोटी फौजों ने किया। ऐसी

घटनाएँ इतिहास में बहुत सी मिल सकती हैं। बहुत से सूरमाओं ने मुक़ाबले किये और आत्म–बलिदान किया, अपना सर हथेली पर रक्खा, और आग में कूद पड़े बहुत से मनुष्य अपने रक्त में नहाये हैं। इसका इतिहास गवाह है, परन्तु कर्बला में कुछ ऐसी बात है कि आज भी वह घटना ताज़ी है।

आप बहुत सी घटनाओं को भुल सकते हैं परन्तु कर्बला को नहीं भुला सकते।

हुसैन (अ0) इसको ऐसा तेजस्वी बनाना चाहते थे कि आगामी भविष्य इसे भुला न सके। उन्होंने इसके लिए कौन सा प्रबन्ध किया।

इतिहास गवाह है कि जब उमैय्या के शासकों के हाथ में राज्य की बागडोर आयी तो उन्होंने बनी हाशिम और उनके मित्रों की हत्या करना चाही वह ये करते थे कि उन लोगों को जो बनी हाशिम का अर्थात् उस क्रान्तिकारी शक्ति का साथ देने वाले थे, जिसे इस्लाम कहा जाता था और जो सांसारिक बुराइयों को समाप्त करने आया था, कभी तलवार और कभी विष देकर समाप्त कर देते थे विभिन्न प्रकार से कष्ट करने का प्रयत्न होता था बनी उमैय्या का अत्यन्त अद्भुत तरीक़ा यह था कि प्रत्येक मनुष्य की अलग–अलग हत्या की जाए, किसी को विष दिया जाय कि संसार को ख़बर न होने पाये, किसी की हत्या छिपकर की जाय। जब अली मुर्तज़ा (अ0) तलवार से मारे गये तो वास्तविक क़ातिलों का पता न चल सका, इमाम हसन (अ0) को विष दिया गया। विष देने वाले छिपे रहे। इसके पूर्व भी ऐसी ही बहुत सी घटनाएँ हो चुकी थीं। उदाहरणतयः अबूजरे ग़फ़्फ़ारी 'रबज़ा' में शहीद किये गये वास्तव में इन घटनाओं से कोई सांवभौमिक प्रभाव उत्पन्न नहीं हो सकता। यहाँ तक कि इमाम हुसैनने उमवी चालबाज़ियों का भांडा फोड़ दिया। उन्होंने यह निश्चय किया कि हमारी तादाद कम हो, परन्तु यह रक्त–बलिदान इस प्रकार हो कि संसार उसे भुला न सके। एक–एक मनुष्य को मार लेना कठिन न था। उसकी कोई प्रधानता भी नहीं थी परन्तु बहत्तर मनुष्य सख़्त गर्मी में भूखे–प्यासे शहीद हुए। जिनमें वृद्ध भी, युवक और बालक भी मौजूद हों जिन पर रोने वाली स्त्रियाँ भी उपस्थित हों तो उसे छुपाया नहीं जा सकता यहीवह श्रेष्ठता है जिससे कर्बला की घटना अद्भुत हो जाती है और उसे भुलाना असम्भव हो जाता है। जो इस याद को मिटाने का भरसक प्रयत्न करने में संलग्न है वह एक चुभन सी महसूस कर रहे हैं।

हुसैन जिस प्रकार इस घटना को संसार के सम्मुख लाना चाहते थे, उस प्रयत्न में सफल हो गये। जिन पर उनको भरोसा नहीं था उनको अलग किया गया। उन लोगों को खोजकर बुलाया गया जिन पर भरोसा था।

ऐसे साथी लाये कि जब तक जीवित रहे मृत्यु के स्वागत के लिए व्याकुल रहे। जब मरने लगे तो यह कहकर मरे "हुसैन से ग़ाफिल न रहना।"

संसार का दुख नहीं, किसी बात की इच्छा नहीं, केवल यह चिन्ता थी कि मन में निर्बलता न आने पाये।

मृत्यु के समय भी एक दूसरे को धैर्य देते चले जाते थे वह कष्ट के समय भी संतोषजनक मुक़ाबला करते हुए आगे बढ़ते गये, वह तीरों के मुक़ाबले में अपना सीना प्रस्तुत करते थे ताकि संसार समझ सके कि मुक़ाबला किस प्रकार किया जाता है।

इस चरित्र ने कर्बला की घटना को बड़ा तेजस्वी बना दिया। इसकी श्रेष्ठता और प्रधानता में बढ़ावा दिया।

हम दृष्टि डालते हैं तो कोई भी घटना इससे महान नहीं दिखाई पड़ती जिसकी श्रेष्ठता के सम्मुख हमारे मस्तक झुक जाएँ। □□□

"औरतों से बहुत ज़्यादा भलाइयाँ करो।"

इतिहास और इस्लाम में औरत की हैसियत

हुज्जतुल इस्लाम प्रो0 हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु0 र0 आबिद

(पिछले शुमारे से आगे)

9– औरत कोई चीज़ ही नही बल्कि कुर्आनी आयतों के लिहाज़ से एक ऐसा व्यक्तत्व है जो बुद्धि और इरादे वाली है और सृष्टि की मोती है। उसमें इन्सानी और ख़ुदाई अच्छाईयाँ और विशेषताएँ हैं

10– औरत सेक्स की मूर्ति नहीं बल्कि मर्द की साथी, साझी, संगनी है। मानव जाति के बाक़ी रहने का कारण है। आधे जीवन को यही बनाती है। पाक नियत से उससे शादी करना इबादत है उससे अच्छा बर्ताव करने से आख़िरत का सामान और इन्सान के आख़िरत वाली जीवन की सलामती का कारण है। कुर्आन मजीद में है:

"तुम्हारी बीवियाँ (जैसे) तुम्हारी खेती हैं। तुम अपनी खेती में जिस तरह आओ और अपनी आगे की भलाई के लिए (अच्छे कर्म) पहले से भेजो और ख़ुदा से डरते रहो और यह भी समझ रखो कि (एक न एक दिन) तुमको ख़ुदा के सामने जाना है और (ऐ रसूल!) ईमान वालों को खुशख़बरी दे दो।"

यहाँ आयत में हर्स (खेती) आया है जिस से मानव समाज में औरत की ज़रूरत को समझाया जा रहा है। औरत सेक्स की प्यास बुझाने के लिए नहीं है बल्कि मानव जाति के जीवन की रखवाली का पाक साधन है।

यह बात उन लोगों को होशियार करती है जो यह कहते हैं कि औरत एक खिलौना है और सेक्स की प्यास बुझाने का साधन है।

'वक़द्दमु लिअन्फुसिकुम' औरत के पास रहकर अपनी आख़िरत के लिए सामान भेजो। यह उस सच्चाई की ओर इशारा है कि औरत के पास रहना सिर्फ मज़ा (भोग) लूटने के लिए नहीं बल्कि मोमिन लोगों को चाहिए कि उससे शरीफ शिष्ट बच्चों को पालने में उपयोग करें। इस तरह पाक कुर्आन ज़ोर देता है कि जीवन साथी चुनने में उन उसूलों का पास लिहाज़ किया जाए जिनके नतीजे में नेक भले बच्चों की तरबियत है और इन्सानी और समाजी पूँजी का जमा करना है।

चूँकि आयत के शुरु में सेक्स मिलन की बात है जो बड़ी महत्व की है और इसका सम्बन्ध सेक्स की प्राकृतिक चाह से है यहाँ इन्सान को 'वत्तकुल्लाह' (और अल्लाह का डरो) से सेक्स में सोच विचार और ख़ुदा के क़ानून पर ध्यान देने की बात है फिर आयत के आख़िर में है कि

इन्सान क़यामत के दिन ख़ुदा का सामना करेगा और अपने कामों का फल पायेगा तो मोमिनों को जिन्होंने अपनी धात्विक (materialistic) और रूहानी (spiritual) ज़िन्दगी के लिए फायदे वाली है जिन्होंने ख़ुदाई क़ानूनों को मान लिया था उन्हें अच्छी ख़बर दी गई है। कहा गया है 'वबश्शिरिल मोमिनीन' (और मोमिनों को अच्छी ख़बर दें)

प्यार के इस महान केन्द्र को इमाम जाफर सादिक़ (अ0) की एक रिवायत में इस तरह कहा गया हः

''जब हव्वा (अ0) पैदा हो गईं तो हज़रत आदम (अ0) ने ख़ुदा से विनती की कि ए अल्लाह यह सुन्दर जीती चीज़ क्या है जिसकें पास रहने और देखने से मेरा अकेलापन दूर हो जाता है और मेरे मन में चाह प्यार जाग उठता है। आवाज़ आईः ऐ आदम (अ0)! यह मेरी दासी है। क्या तुम यह चाहते हो तुम्हारी साथी बन जाए, तुमसे बातें किया करे और तुम्हारे सही जायज़ चाहतों को पूरा करे। उन्होंने कहा, 'हाँ'। आवाज़ आई कि जब तक तुम जीते हो इस मदद करने वाली पर जो मैंने तुम्हारे लिए ठहराई है मेरी हम्द (संस्तुति) करते रहो।''

जी हाँ, नेक औरत, वफ़ादार जीवन साथी का होना ख़ुदा की नेमत है। इस बहुमूल्य नेमत पर जीवन भर हम्द करना ज़रूरी है।

छटे इमाम फरमाते हैंः

''ज़्यादा भलाई औरतों में है।''

यह अजीब रिवायत है कि जो ज़्यादा भलाई का सोता औरत को ठहराती है। औरत से शादी करना आधा दीन (धर्म), उसके अधिकारों का ख़याल करना इबादत, उससे प्यार ख़ुदा की बात पर चलना, उससे नेक बच्चे का जन्म, आख़िरत की पूँजी, उसके लिए काम करना ख़ुदा की ख़ुशी का कारण है। रसूल (स0) माँ के बारे में फरमाते हैंः जन्नत माँ के पाँव में है। यही ज़्यादा नेकी है जिसकी ओर रसूल (स0) ने इशारा किया है। वे प्यारे जवान जो शादी करना चाहते हैं या कर चुके हैं और मोमिन मर्दों को ख़बरदार करता हूँ कि औरतों के बारे में उन ख़ुदाई अधिकारों का ख़याल रखे, उनके अधिकार बर्बाद करने से बचें और यह समझ लें कि उन्होंने किस बहुमूल्य मोती से अपने जीवन को क़ीमती बनाया है। वे लड़कियाँ जो शादी करना चाहती हैं या शादी कर चुकी हैं और बड़ी औरतों से विनती करता हूँ कि इन बातों को देखते हुए अपना मूल्य और मान पहचानें और अपने औरत होने पर ख़ुदा का शुक्र करें और कुर्आन की शिक्षा, रसूल (स0) और इमामों की हदीसों के अनुसार अपने पति के लिए योग्य और शिष्ट जीवन–साथी बनें। औरत होने और पति व बच्चों के मामले में पाक भावों से फायदा उठायें और अपने जीवन के सभी हिस्सों/विभागों में ख़ुदा के क़ानून का ख़याल रखें ताकि अच्छा घराना, शिष्ट भले पाक बच्चे और ख़ुशहाली का जीवन नसीब हो, इस तरह ख़ुदा की ख़ुशी पायें और चाल चलन से जीवन को पाक–साफ, मीठा और सुन्दर बना सकें।

(जारी)

इदारा

मुख्य समाचार

नजफ में आशूरा के जुलूस व मुक़द्दस मज़ारों और आयाते एज़ाम पर हमले का मन्सूबा नाकाम

इराक़। आशूरा के क़रीब नजफ में जहाँ हज़रत अली अलैहिस्सलाम का मज़ार स्थित है ख़तरनाक ख़ून–खराबा हुआ। नजफ सूबे के गवर्नर सुलतान अबुख़लील ने यह दावा किया है कि हथियारबन्द लड़ाकुओं के गिरोह ने आशूरा के मौक़े पर नजफ में शीआ फिरक़े के मुक़द्दस जगहों, आयाते एज़ाम व उलमाए केराम और सैय्यिदुश्शोहदा का मातम करने वालों पर बड़ा भयानक हमला करने का मन्सूबा बनाया था। इराक़ के हुक्काम ने लड़ाकुओं की पहचान नहीं की है मगर ''जन्नत की फौज'' (Army of Heaven) नामी एक ग्रुप के पास ख़तरनाक हथियार और एण्टी एयरक्राफ्ट गन भी थी और इन्होंने नजफ के बाहर बाग़ों में ख़न्दक़ें खोद ली थीं जिनका मुक़ाबला करना इराक़ी फौज को मुश्किल हो गया तो फिर अमरीकी एयरफोर्स की मदद ली गई। इराक़ में अशूर के रोज़ कर्बला, नजफ और दूसरे शहरों में बड़े–बड़े जुलूस निकलते हैं उन्हीं पर हमला करने का मन्सूबा बनाया था।

नजफ पर क़ब्ज़े की तैयारी थी

नजफ के गवर्नर ने बताया कि इस हमले का मक़सद पूरे मुक़द्दस शहर नजफ को तबाह करना था हमला करने वालों ने यहाँ के मुक़द्दस मज़ार की तबाही, शीआ मराजे व आलिमों के क़त्ल और आशूर के लिये आने वाले ज़ाएरीन को हलाक करने का मन्सूबा बनाया था। नजफ के सरकारी तर्जुमान दबील ने यह दावा करते हुए कहा कि हमला करने वाले हज़रत अली (अ0) के मज़ार को नुक़सान पहुँचाना चाहते थे और अगर वह अपने मन्सूबे में कामियाब हो जाते तो भारी ख़ून–ख़राबा होता और यह हादसा पिछले साल फरवरी में सामरा में असकरिया मज़ारों पर होने वाली बमबारी से बड़ा हादसा होता।

उन्होंने कहा कि जंग के बीच नजफ पर क़ब्ज़ा करने के लिए बड़े शीआ उलमा को भी हलाक करने का मन्सूबा बनाया गया था जिनमें ख़ास तौर से आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यिद अली सीस्तानी भी शामिल हैं। यह मालूमात गिरफ्तार होने वाले एक सौ तीन लड़ाकुओं से मिली।

आशूरा का जुलूस रिवायती शान व शौकत से निकाला गया

लखनऊ। 10–मुहर्रमुलहराम 1428 हि0 को आशूरा का जुलूस अपने रिवायती अन्दाज़ से निकला। इमामबाड़ा नाज़िम साहब में मौलाना सै0 हमीदुल हसन साहब ने पहले मज्लिस को सम्बोधित किया। विक्टोरिया स्ट्रीट से नक्ख़ास, टूरियागंज, हैदरगंज चौराहा होते हुए पुरअमन तौर पर जुलूस कर्बला तालकटोरा पर ख़त्म हुआ। जुलूस में शहर की सभी मातमी अन्जुमनें अपने अलमे मुबारक के साथ नौहा ख़्वानी व सीनाज़नी करती हुई जुलूस के साथ कर्बला तालकटोरा पहुँचीं।

पुलिस और इन्तिज़ामिया के सख़्त हिफाज़ती बन्दोबस्त की वजह से कोई ना खुशगवार वाक़ेआ पेश नहीं आया।

मज्लिसे शामे ग़रीबाँ

शामे ग़रीबाँ की मज्लिस को इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमाब में रात साढ़े आठ बजे क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद नक़वी ने सम्बोधित किया। इस मौक़े पर ठण्डक के मौसम में बारिश की वजह से यह समझा जा रहा था कि मज्लिस में मातम करने वालों की संख्या पर असर पड़ेगा लेकिन भीगी ज़मीन और आसमान से होती हुई बारिश के बावजूद मज्लिसे शामे ग़रीबाँ में बड़ी संख्या में सैय्यिदुश्शोहदा के अज़ादारों ने शिरकत की।

''ख़ैरुलअमल इस्लामिक सोसाइटी'' की पहली मीटिंग

लखनऊ। आज 27, जनवरी 2007 ई0 को क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद नक़वी साहब क़िब्ला इमामे जुमा की सरपरस्ती में कुछ दिन पहले बनने वाली तन्ज़ीम यानी ख़ैरुलअमल इस्लामिक सोसाइटी की पहली मीटिंग, सोसाइटी के दफ्तर स्थित कल्बे आबिद प्लाज़ा जौहरी मोहल्ला लखनऊ में दोपहर बाद हुई। दीनी व मिल्ली जज़्बात से भरपूर नौजवानों की यह मीटिंग सोसाइटी के उभरते हुए जवान क़सीम अब्बास साहब ने क़ाएदे मिल्लत की इजाज़त से बुलाई, मीटिंग में सोसाइटी के मक़ासिद और मन्सूबों पर बहस हुई और क़ौम व मिल्लत के जवानों को जगाने के लिये और आज के ज़माने में समाज को इस्लामी व रूहानी बनाने और मुहम्मद (स0) व आले मुहम्मद (अ0) के पैग़ामों को पहुँचाने पर कामियाब बातचीत हुई जिसमें इन्जीनियर सिराज नैयर साहब की इस राय को जवानों ने ख़ूब सराहा कि दूसरे ज़िलों और क़स्बों में सोसाइटी के आफिस बनाए जाएँ ताकि वहाँ के जवान जिले और क़स्बे की सतह पर लोगों को होशियार करने और दीनदारी का काम अपनी–अपनी सलाहियत और ताक़त के हिसाब से अन्जाम दें और साल या छः महीने पर सदर दफ्तर के ज़रिए होने वाले जल्से में बमक़ाम इमामबाड़ा हज़रत ग़ुफ़रानमॉब में हर ज़िले के नुमाइन्दे अपने–अपने कामों को पेश करें ताकि पिछले तजुर्बों से आने वाले हालात के मन्सूब तै किये जाएँ।

मीटिंग में यह भी तैय पाया कि सोसाइटी अपने इरादों को पूरा करने के लिये मीडिया और लिटरेचर का भरपूर सहारा लेगी और मिल्लत की दुनियावी व दीनी तालीम की मुश्किलों को समझने समझाने और हल करने की पूरी कोशिश करेगी।

मीटिंग इस फैसले पर ख़त्म हुई कि अगली मीटिंग 12–मुहर्रम 1428 ई0 को नूरे हिदायत फाउण्डेशन (दफ्तर मासिक 'शुआ–ए–अमल') इमामबाड़ा गुफ़रानमॉब में क़ाएदे मिल्लत की देखरेख में तीन बजे दिन में होगी।

अल-इमाम फाउण्डेशन ने फलाही कामों का वार्षिक जायज़ा लिया

अम्बेडकरनगर। जिले़ की अकेली केन्द्रीय हुकूमत से तस्लीम शुदा फलाही तन्ज़ीम अल–इमाम चेयरटेबल फाउण्डेशन के ज़िम्मेदार हाजी फिदा गुलाम हुसैन उर्फ चाचा साहब कनाड़ा की क़ौमी ख़िदमतों का उत्तरप्रदेश में बड़ा ज़ोर है। उनके सारे फलाही, क़ौमी, दीनी व समाजी काम अल–इमाम फाउण्डेशन के चेयरमैन ख़्वजा शफाअत हुसैन की निगरानी में पूरे हो रहे हैं। अल–इमाम ने सन् 2006–07 ई0 के कामों का जायज़ा लेने के लिये वार्षिक मीटिंग की जिसमें साल भर के कामों को इत्मिनान वाला पाया गया। इस मीटिंग में सदर ख़्वाजा शफाअत हुसैन ने अपने ओहदेदारों से क़ौम की ग़रीबी मुफ्लिसी दूर करने, दीनी ख़यालों और शिक्षा के मेयार को बढ़ाने के लिए उनकी मदद का शुक्रिया अदा किया और कहा कि हमको अपने समाज से मन्फी ख़याल (Negative Think) दूर होने की दुआ भी करना चाहिए।

उन्होंने मीटिंग को सम्बोधित करते हुए कहा इन फलाही कामों का बदला ख़ुदा, मुहम्मद व आले मुहम्मद से मिलेगा अगर क़ौम इसकी अच्छाई की जगह तनक़ीद (आलोचना) करती है तो उस पर अफसोस करने की ज़रूरत नहीं है।

अल–इमाम फाउण्डेशन की मीटिंग में सालभर के कामों का खुलासा करते हुए प्रेस के नाम एक बयान जारी करते हुए अपने सिक्रेट्री ज़ाएर जाफरी एडवोकेट के हवाले से बताया कि इस दौरान में अम्बेडकर नगर के अलावा आज़मगढ़, जौनपुर, सन्त कबीर नगर, गोरखपुर, फैज़ाबाद, सुलतानपुर, लखनऊ, प्रतापगढ़ और बाराबंकी में कई तरह के फलाही काम हुए। सिक्रट्री ने बताया कि क़रीब 540 मकानों को ग़रीबों के लिए बनवाया गया उनके टूटे हुए मकानों को पक्का कराया गया इसी तरह ग़रीब, यतीम बेसहारा और बेवा के इलाज करवाए गये जिनकी तादाद तक़रीबन 1480 है। क़ौम के मेयार को बुलन्द करने के लिए इस साल 1790 बच्चों को वज़ीफे दिये गये जिसमें एम0बी0बी0एस0, बी0यू0एम0एस, बी0सी0ए0 और इन्जीनियरिंग के छात्र शामिल हैं। उन्हीं पच्चीस हज़ार वार्षिक तक वज़ीफे के ज़रिये मदद दी गयी क़रीब पन्दरह सौ घरों, मस्जिदों, इमामबारगाहों, स्कूलों में वाटर पम्प लगवाए गएं तक़रीबन पाँच मस्जिदें और सात इमामबाड़े बनवाए गए दो अरबी कालेजों की तामीर के अलावा तक़रीबन तेरह सौ बेवा औरतों को घरेलू पेंशन भी दी गई, मरीज़ों को मुफ्त डाक्टरी सहूलत के अलावा दो एम्बुलेन्स का भी इन्तिज़ाम किया गया और तक़रीबन एक सौ पचास लड़कियों की शादी इसी मदद से की गई।